IJAER/ March-April 2021/Volume-9/Issue-5 ISSN: 2278-9677

International Journal of Arts & Education Research

कुशीनगर की स्थापत्य कला का समीक्षात्मक अध्ययन

पूजा चौहान
शोधार्थी
ललित कला विभाग
मालवांचल विश्वविद्यालय
इन्दौर, म0प्र0

ड़ॉ प्रीति गुप्ता
शोध निर्देशिका
ललित कला विभाग
मालवांचल विश्वविद्यालय
इन्दौर, म0प्र0

सारांश

मल्लों की राजधानी कुशीनगर की पावन भूमि के **'शालवन'** जहाँ भगवान बुद्ध ने महापरिनिर्वाण प्राप्त किया था। तथा **'मुकुटबंधन चैत्य'** जहाँ उनका छः दिन बाद दाहसंस्कार किया गया था। इसीलिए यह क्षेत्र विश्व भर के बौद्ध अनुयाइयों के लिये दर्शनीय और वन्दनीय हो गया। पूर्व काल में यह भी निर्जन जंगल था, भगवान बुद्ध के यहाँ परिनिर्वाण प्राप्त करने पर यह स्थान बौद्ध तीर्थ बन गया।

कुशीनगर की स्थापत्य कला को ऐतिहासिक विकास

कुशीनगर बौद्ध धर्म के अनुयाइयों के लिये पावन तीर्थ स्थल है। क्योंकि यहाँ पर प्राणीमात्र के कल्याण के लिए अवतरित भगवान बुद्ध ने अपने ज्ञान से सम्पूर्ण विश्व को प्रकाशित कर अपने जीवन की अंतिम यात्रा कुशीनगर में समाप्त की थी। अर्थात् भगवान बुद्ध ने कुशीनगर की इस पावन धरती पर **'महापरिनिर्वाण'** प्राप्त किया था। इसलिए यह स्थल बौद्ध अनुयाइयों के लिए तीर्थ वन गया और सम्पूर्ण विश्व से यहाँ प्रतिवर्ष लाखों श्रद्धालु अपने ईश्वर के दर्शन करने आते हैं। इस नगर की महत्वता के बारे में तथागत बुद्ध ने अपने प्रिय शिष्य आनन्द से स्वंय कहा था– आनन्द! मेरे परिनिर्वाण के बाद मेरा जन्म स्थान लुम्बनी, बुद्धत्व प्राप्ति स्थल बोधगया, धर्मचक्र प्रवर्तन स्थान ऋषिपत्तन, मृगदाय (सारनाथ) तथा परिनिर्वाण का स्थान कुशीनगर ये चार महातीर्थ होंगे। ये स्थान लोगों, भिक्षु–भिक्षुणियों और उपासक–उपासिकाओं के लिए उत्तम और पूजनीय होंगे। भविष्य में श्रद्वालु भिक्षु–भिक्षुणियों और उपसक–उपासिकायें यहाँ आएँगी। उनमें से जो कोई यहाँ चैत्य की प्रदक्षिणा करते हुए प्रसन्न मन से काम करेगा वह सुमति को प्राप्त होकर स्वर्ग में उत्पन्न होगा। अतः आनन्द श्रद्धालु कुलपुत्र के लिए ये चार स्थान दर्शनीय और संवेगोत्पादक हैं।

कुशीनगर का इतिहास

प्राचीन कुशीनगर के बारे में किवदन्ती के अनुसार यह नगर श्री रामचन्द्र जी के ज्येष्ठ पुत्र कुश द्वारा बसाया गया था। अतः इसे कुशीनगर के नाम से पुकारते हैं। बौद्ध ग्रन्थ **'महावंश'** में कुशीनगर का नाम कुशावती भी कहा गया है। महावंश और दिववंश के अनुसार कुशीनगर बारह इक्ष्वाकुवंशी राजाओं की राजधानी रह चुकी है। बौद्ध साहित्य में कुशीनगर को कुशिनारा, कुशीनगरी और कुशीग्राम नामों से भी जाना जाता है। चीनी साहित्यों में इसे **'किउशीनाकियीलो'** नाम से और सिंहली में **'कुशीनारानुवर'**, वर्मी में **'कुशीनारू'** तथा तिब्बती, भूटानी में **'चम्हों ठुंड'** नामों का वर्णन किया गया है। कुशीनगर (कुशीनारा)

मल्ल गणराज्य की राजधानी था, जो अति सम्पन्न तथा अपने स्वाभिमान के लिए विख्यात था। यहाँ के मल्ल बौद्ध धर्म के अनुयाई थे, जैसे कि शाक्यों की राजधानी को भगवान बुद्ध की जन्मभूमि होने का गौरव प्राप्त था। उसी तरह मल्लों की राजधानी कुशीनगर (कुशीनारा) गौतम बुद्ध की महापरिनिर्वाण भूमि है। 483 ई.पू. में महान उपदेशक, जगतगुरू, लोकनायक ने पैंतालीस वर्ष तक संसार को अपना आदर्श तथा कल्याण का सुपथ प्रदर्शित करते हुये वैशाख पूर्णिमा मंगलवार के दिन कुशीनारा के शालवन के उपवन में युग्मशाल वृक्षों के नीचे चिर–समाधि ली थी। इस शालवन को कनिंघम ने वर्तमान कसया के **'माथाकुंअर कोट'** के रूप में पहचान की है।

भगवान बुद्ध के परिनिर्वाण के पश्चात छः दिनों तक लोग उनके निष्प्राण शरीर का पुष्प, गीत तथा वाद्य से सत्कार किया, इसके उपरांत सातवें दिन वे उनके शरीर को **'मुकुट बन्धन'** चैत्य ले गये। वहीं पर राजोचित विधान के साथ उनका दाहसंस्कार किया गया। यह चैत्य **'मुकुट बन्धन'** इसलिए कहलाता था क्योंकि यहाँ मल्ल राजाओं का अभिषेक कर उनके सिरपर मुकुट बांधा जाता था। वर्तमान में मुकुट बंधन चैत्य की पहचान रामाभार तालाब के पश्चिमी तट पर स्थित एक विशाल स्तूप के खण्डहर से की गई। जो माथा कुंअर कोट से लगभग एक मील दूर स्थित है। इस स्थान की मिट्टी पवित्र मानी जाती है। दाह संस्कार के पश्चात अस्थि विभाजन पर विवाद उत्पन्न हुआ, जिसे द्रोण नामक ब्राह्मण की चतुराई द्वारा सुलझाया गया और अस्थियों को आठ भागों में विभक्त किया गया। जिन्हें लेकर सभी राज्यों के प्रतिनिधि अपने राज्यों को लौट गये और अपने स्थान पर स्तूप का निर्माण कराया। साँची स्तूप के तोरण द्वार पर इस घटना का चित्रण किया गया है।

कुशीनगर की स्थिति

सर्वप्रथम 1861-62 ई. में कनिंघम ने कुशीनगर की पहचान की थी। वर्तमान में कुशीनगर का निर्माण वर्श 1994 ई. में देवरिया जिले के कुछ हिस्से को काटकर किया गया। कुशीनगर जिला गोरखपुर पूर्व में स्थित है, गोरखपुर से इसकी दूरी लगभग 53 किमी. है। इस जिले का विस्तार 26.45 उत्तरी अक्षांश तथा 86°24 पूर्वी देशान्तर पर स्थित है इस जिले का मुख्यालय पड़रौना है। जो गोरखपुर जिले से 71 किमी. की दूरी पर स्थित है। इस जिले का क्षेत्रफल 2873.50 वर्ग किमी0 है। कनिंघम न अपने मत के समर्थन में परिनिर्वाण मंदिर के पीछे स्थित स्तूप में मिले ताम्र पत्र का उल्लेख किया है, जिस पर **'परिनिर्वाण चैत्य ताम्रपत्र इति'** उल्लिखित है। यहाँ स्थल मार्ग तथा वायु मार्ग से पहुंचा जा सकता है। विदेशी पर्यटकों के आने हेतु यहाँ का हवाई अड्डा कुशीनगर से सिर्फ 5 किमी. की दूरी पर कसया में स्थित है। स्थलमार्ग से भी यहाँ बस, कार, जीप आदि गोरखपुर से आसानी से प्राप्त हो जाते हैं।

पुरातात्विक उत्खनन

प्राचीन कुशीनगर को प्रकाश में लाने का श्रेय बुकानन और लिस्टन ने किया। सर्वप्रथम उत्खनन का कार्य कनिंघम और उनके सहायक ए. सी. एल. कार्ले ने सन 1875-1877 ई. तक की और उन्हें एक निर्वाण मुद्रा में बुद्ध मूर्ति मिली जो ईंट के मंदिर से प्राप्त हुई और उनका मुख उत्तर दिशा में था। भगवान बुद्ध की चिर निद्रा में लेटी हुई प्रतिमा थी, इस मूर्ति के बारे में ह्वेनसांग ने कुशीनारा में बुद्ध परिनिर्वाण की मूर्ति का वर्णन किया है। चीनी यात्रियों द्वारा भी उनके यात्रा व्रतांत में इस मूर्ति का वर्णन प्राप्त होता है। 1904-1905 ई. में भारतीय पुरातत्व विभाग के अधिकारी में जे. एफ. वोगल और 1910-12 ई. में हीरानन्द शास्त्री द्वारा सर्वेक्षण कार्य करवाया गया था। इस सर्वेक्षण में विशाल स्मारक, संघाराम व स्तूप को प्रकाशित किया

गया था। यहाँ से प्राप्त पुरातत्व उत्खनन के साक्ष्यों के आधार पर कुशीनगर के बौद्ध स्मारकों को दो भागों में वर्णित किया जा सकता है।

(अ) शालवन जहाँ बुद्ध को परिनिर्वाण प्राप्त हुआ था।

(ब) मुकुटबंधन चैत्य जहाँ उनका दाहसंस्कार हुआ था।

परिनिर्वाण स्थल को **'माथाकुंआर कोट'** तथा **'मुकुटबंधन चैत्य'** का प्रतिनिधित्व आधुनिक **'रामाभार का टीला'** करता है। माथाकुँवर कोट के गर्भ में परिनिर्वाण मंदिर तथा मुख्य मंदिर प्राप्त हुए जो आज भी दर्शनीय हैं।

कुशीनगर के स्मारक स्थापत्य

1- परिनिर्वाण मंदिर

यहाँ पर स्थित परिनिर्वाण मंदिर दर्शकों को दूर से ही आकर्षित करता है। सर्वप्रथम कर्लाइल ने 1876 ई. में यह मंदिर और परिनिर्वाण प्रतिमा को उत्खनन द्वारा प्राप्त किया था। प्रारंभ के उत्खनन में एक गर्भगृह और प्रवेश कक्ष के अवशेष प्राप्त हुए थे। इस टीले की खुदाई करवाते समय कार्लाइल महादेय को एक ऊँचे सिंहासन पर भगवान बुद्ध की लेटी हुई विशाल प्रतिमा के दर्षन हुए। यह प्रतिमा बलुए चित्तीदार पाषाण से निर्मित 20 फीट लम्बी बनाई गई थी। इस मूर्ति में तथागत उत्तर की ओर सिर किये तथा पश्चिम की ओर मुख कर दाहनी करवाट लिए हुए चिरनिद्रा में लेटे हैं, जिसमें दांया हाथ सिर के नीचे ओर बांया हाथ जंघा पर रखे दर्शाया गया है तथा दोनों पैर एक के ऊपर एक रखे हैं।

यह मूर्ति 24 फीट लम्बे तथा 5 फीट 6 इंच चौड़े ईंटों द्वारा निर्मित विशाल सिंहासन पर आसीन है। सिंहासन के पश्चिमी सिरे पर तीन शोक सन्तप्त मूर्तियाँ बनीं हैं, बांई ओर लम्बे बालों वाली महिला की है, मध्य में दर्शकों की ओर कमर करके बैठे एक ध्यानमग्न श्रमण की है तथा इसके दाईं ओर भी एक श्रमण की आकृति उकेरी गई है जिसमें उसका सर परेशानी से झुका हुआ उसके दायें हाथ पर टिका है। ये मूर्तियाँ उस समय शोक मनाते हुए श्रमण की हैं। जिसके नीचे पांचवी शताब्दी का लेख उत्कीर्ण है। इस लेख में प्राप्त वर्णन के अनुसार इस महान प्रतिमा का निर्माण मोनेस्ट्री के श्रमण **'हरिबाला'** द्वारा मथुरा के शिल्पी दिन्न से करवाया गया था।

ह्वेनसांग ने अपनी यात्रा के दौरान इस प्रतिमा को देखा था। इसपर प्राप्त अभिलेख की लिपि के अनुसार यह पांचवी शताब्दी की लगती है। वर्तमान में भारत सरकार ने पुराने मंदिर को गिराकर नवीन भव्य मंदिर का निर्माण करवा दिया है। जिसे परिनिर्वाण मंदिर के नाम से जाना जाता है। इस मंदिर से उत्खनन में कुषाणों के समय की मुद्रायें भी प्राप्त हुईं हैं, जिनमें चार मुद्रायें कनिष्क की हैं। यहाँ पर अन्य स्तूपों के भी साक्ष्य मिले हैं, परिनिर्वाण मंदिर के उत्तर में मौर्यकालीन भवनों के अवशेष प्राप्त हुए हैं जो श्रद्धालुओं द्वारा बनाये गये होंगे। दक्षिणी भाग के स्मारकों में भी अधिकांश छोटे–छोटे स्तूप प्राप्त होते हैं जो भक्तों द्वारा बनवाये हुये लगते हैं।

2- मुख्य स्तूप (परिनिर्वाण स्तूप)

परिनिर्वाण मंदिर के पीछे ठीक उसी स्थान पर स्तूप बनाया गया है, जहाँ भगवान बुद्ध ने दो साल वृक्षों के बीच **'महापरिनिर्वाण'** प्राप्त किया था। ह्वेनसांग ने इस स्तूप की ऊंचाई 200 फुट बताई थी और इसके निर्माण का श्रेय अशोक को दिया है। 1877 ई. में कार्लाइल ने इसे लगभग 150 फुट पाया था। हीराचन्द्र शास्त्री की अध्यक्षता में 1910 ई. में इस स्तूप में उत्खनन कर्य

कया गया, उत्खनन में सबसे ऊपर जयगुप्त नामक राजा का तांबे का सिक्का तथा नाक्काशीदार ईंटें प्राप्त हुई। इस स्तूप के अंदर एक तांबे का घड़ा भी मिला था जिसमें जले कोयले, मोती, माणिक्य, पन्ना तथा दो ताम्र नलियाँ रखीं थी। इस स्तूप से प्राप्त ताम्रपात्र पर संस्कृत भाषा में **'निदानसूत्र'** लिखा गया हैं। इस स्तूप की स्थापत्यकला शिवलिंग की भांति है जिसके ऊपरी भाग पर बेदिका बनाई गई है तथा उसके ऊपर तीन छात्रों वाली हर्मिका स्थापित हैं।

माथाकुवर मंदिर

यह मंदिर निर्वाण स्तूप से लगभग 400 गज की दूरी पर दक्षिण–पश्चिम दिशा में स्थित है। जिसके खण्डहर को वर्तमान समय में **'माथाकुंअर कोट'** के नाम से जाना जाता है। इसका उत्खनन कार्य कार्लाइल महोदय ने किया था, जिसमें भूमि स्पर्श मुद्रा 3.05 मी. ऊँची महात्मा बुद्ध की विशाल प्रतिमा यहां से प्राप्त हुई है। काले पत्थर से निर्मित इस मूर्ति के नीचे एक 11वीं शताब्दी का लेख प्राप्त हुआ है जिसमें कलचुरी वंश के स्थानीय शासक का वर्णन प्राप्त होता है। जिसके अनुसार इस मूर्ति तथा मंदिर की रचना 11.12 वीं शताब्दी में कलचुरी शासन काल में हुई। इस मंदिर के साथ ही खुदाई से एक मठ के अवशेष भी मिले हैं। 1911 की खुदाई में इस प्रतिमा का प्राचीन सिंहासन प्राप्त हुआ। 1927 ई0 में वर्तमान मंदिर का निर्माण किया गया और उसी प्राचीन मूर्ति को इस मंदिर में स्थापित किया गया। यहाँ के उत्खनन से बुद्ध के जीवन के घटनाओं पर आधारित मिट्टी की मुहरें मिलीं थीं। वर्तमान समय में माथाकुंअर नाम से एक नये मंदिर का निर्माण किया गया है। प्राचीन अवशेषों के साथ कुशीनगर के यह मंदिर दर्शनीय हैं। इन मंदिरों की वास्तु स्थापत्यकला दर्शनीय हैं।

3- रामाभार स्तूप

यह स्तूप महापरिनिर्वाण मंदिर से लगभग 1.5 किलोमीटर की दूरी पर हैं। माना जाता है कि यह स्तूप उसी स्थान पर बना है जहां महात्मा बुद्ध को 483 ईसा पूर्व अंतिम संस्कार किया गया था। प्राचीन बौद्ध लेखों में इस स्तूप को **'मुकुटबंधन चैत्य'** के नाम से वर्णन किया गया है। कहा जाता है कि यह स्तूप महात्मा बुद्ध की मृत्यु के समय कुशीनगर पर शासन करने वाले मल्ल शासकों द्वारा बनवाया गया था। कनिंघम ने जब यहाँ का सर्वेक्षण किया तब इस स्तूप को **'भवानी की मढिया'** से जाना जाता था। 1910 में हरिशचन्द्र शास्त्री की अध्यक्षता में यहाँ का उत्खनन हुआ तब इस स्तूप का वास्तविक व भव्य स्वरूप सामने आ पाया। इसके उत्खनन से प्राप्त मौर्य कालीन ईटें इस स्तूप की प्राचीनता की परिचायक हैं। इस स्तूप के अवशेष से यह स्पष्ट है कि मुकुटबंधन स्तूप शालवन के परिनिर्वाण स्तूप से विशाल रहा होगा। इस स्तूप के पास अनेक छोटे स्तूप व मंदिरों के अवशेष प्राप्त होते हैं।

4- आधुनिक स्तूप

कुशीनगर में अनेक देशों के बौद्ध अनुयाइयों ने आधुनिक स्तूपों का निर्माण करवाया है। यहाँ पर चीनी भिक्षुओं द्वारा बनवाए गए स्तूप की स्थापत्यकला चीनी मंदिरों की भान्ति है तथा इस मंदिर में महात्मा बुद्ध की चीनी स्वरूप की सुदंर प्रतिमा स्थापित की गई है। जापानी बौद्ध अनुयाइयों द्वारा स्थापित किया गया जापानी मंदिर की स्थापत्यकला घंटे के नुमा है। इसमें अष्टधातु से बनी महात्मा बुद्ध की आकर्षक प्रतिमा रखी गई है। इस प्रतिमा को जापान से लाया गया था। इसके अलावा थाई बौद्ध अनुयाइयों द्वारा यहाँ वाट–थाई मंदिर का निर्माण करवाया है, जो आकर्षण और विशाल मंदिर–परिसर के साथ पारम्परिक थाई–बौद्ध वास्तुकला का उदाहरण है। यहाँ स्थापित इन विदेशी मंदिरों की स्थापत्यकला दर्शकों को आकर्षित करती हैं।

बौद्ध संग्रहालय

कुशीनगर के संग्रहालय में उत्खनन से प्राप्त विभिन्न अनमोल वस्तुओं को संगृहीत किया गया है। जिसमें पत्थर व धातु की मूर्तियाँ, मुहरें, सिक्के, विभिन्न प्रकार के पात्र, चित्रित प्रस्तर खण्ड, काष्ट स्तम्भ तथा नक्काशीदार ईंटों आदि को रखा गया है। यह संग्रहालय इंडोश्रीलंकन बौद्ध केंद्र के निकट स्थित है। आसपास की जापान–खुदाई से प्राप्त अनेक सुदंर मूर्तियों को इस संग्रहालय में देखा जा सकता है। यह संग्रहालय सोमवार के अलावा प्रतिदिन सुबह 10 से शाम 5 बजे तक खुला रहता है। कुशीनगर दुनिया के बौद्ध अनुयाइयों के लिए महान आस्था का स्थान है, प्रत्येक बौद्ध अनुयाई भगवान बुद्ध की परिनिर्वाण स्थली के दर्शन करने के लिए आता है। कुशीनगर में अनेक देशों की स्थापत्यकला तथा भगवान बुद्ध की उपासना का एक अदभुत स्वरूप देखने को मिलता है।

सहायक ग्रंथ

- अग्रवाल वसुदेवशरण 1953 कल्पवृक्ष, नई दिल्ली।
- अग्रवाल वसुदेवशरण 1977 भारतीय कला, पृथ्वी प्रकाशन, वाराणसी।
- अग्रवाल वसुदेवशरण 1984 सारनाथ, आर्कियोलाजिकल सर्वे ऑफ इण्डिया, नई दिल्ली।
- कनिंघम अलेक्जेण्डर 1975 भरहुत स्तूप (हिन्दी अनुवाद) भारतीय पब्लिशिंग हाउस दिल्ली।
- दीक्षित आशीष कुमार 2007 बौद्ध परिपथ (उत्तर प्रदेश) में पर्यटन समस्यायें, सम्भावनायें विकास एवं नियोजन', छत्रपति साहू जी महाराज विश्वविद्यालय, कानपुर।
- धम्मपदट्ठ कथा ग्रन्थ प्रकाशक प्रेस–श्रीलंका, कोलम्बो 1931।
- उपाध्याय, भरतसिंह 2018 बुद्धकालीन भारतीय भूगोल, प्रयाग हिन्दी साहित्य सम्मेलन, इलाहाबाद।
- उपाध्याय बलदेव 1978 बौद्ध दर्शन मीमांसा, चौखम्भा विद्याभवन, वाराणसी।